बहुत दिन हुए बच्चे मिले नहीं

1. इस संसार में तीन ही संबंध हैं बाप, टीचर और गुरु जो अपना सब कुछ देकर चाहे खुद पूरा ही क्यों न खाली हो जायें, वैसे पूरा खाली होते नहीं हैं, पर खाली होकर भी अपने से छोटों को आगे बढ़ता देखकर बेहद खुश होते हैं, भले ही वह मिलकियत या कला या कुछ भी उनके बड़े परिश्रम से उन्हें प्राप्ति हुई हो। वह जिनका गुण ही दाता है उसको देने में कितनी अपार खुशी होती होगी! और हमारे पिता तो दाता के साथ-साथ सागर भी हैं।

2. एक पिता अपने शौक तभी पूरे करता है जब तक कि वह पिता नहीं बनता और एक पिता जितनी खुशी अपने बच्चे के शौक पूरे करने में महसूस करता है उतनी उसे खुद के ख्बाब पूरे करने में कभी नहीं हुई होगी, जो चीज उसे नहीं मिली उसके लिए शायद इतना प्रयास कभी नहीं किया जितना अपने बच्चों को दिलाने में प्रयत्नशील रहता है। एक बार सचिन तेन्दुलकर से किसी ने पूछा था कि क्या वह किसी से हारना चाहेंगे तो उन्होंने कहा था कि हां अपने बच्चों से हारना चाहूंगा। सारी दुनिया से जीत प्राप्त करने पर जो खुशी नहीं मिली वह तेन्दुलकर जी को अपने बच्चों से हारने पर महसूस होगी, इसी प्रकार अनेकों प्रान्तों को जीतने वाला बाबर अपने बच्चे हुमायुं को अपना जीवन देकर भी बेहद सन्तुष्टि एवं खुशी महसूस करता है, इसी प्रकार रूहों के वालिद भी सोचते होंगे कि अपनी समस्त शक्तियां एवं गुण बच्चों को देकर उनका उपयुक्त उपयोग कर लूं, उससे मिलने वाला सुख अनेकों के चेहरों पर खुशी के रंग देखकर परमपिता को भी असीम सन्तुष्टि होती जरूर होगी। क्योंकि उनकों बच्चों के सिवा और कोई है ही नहीं। परमपिता के गुण और शक्तियों का इससे बेहतर और कोई यूज भी नहीं कर सकता। अपनी सम्पूर्ण विरासत बहिश्त बच्चों के हवाले कर मैं वानप्रस्थ में निश्चिन्त हो बैठ जाऊं, पर बच्चे बहुत दिनों से मिले नहीं, कैसे होंगे?

रावण के राज्य में अपने आपको बचा पा रहे होंगे या माया की अभेद्य-अचूक-आश्चर्यवत चालों की चकाचौंध में तो नहीं खो गए। माया के अति लुभावने, सुहावने रूप विज्ञान के नित नए साधन, संसाधन के प्रयोग, स्वर्णिम संसार का रूप रख भोले बच्चों को भ्रमित तो नहीं कर दिया! कलियुग के सर्वशक्तिमान बन चुके रावल से टक्कर लेने वाले भोले बच्चों के भोलेपन की भोली-भोली बातें सुने बहुत दिन हुए, भविष्य संसार के संचालकों ने स्वर्णिम संसार को चलाने का क्या ग्राफिक बनाया है कुछ पता नहीं चल रहा है क्योंकि बहुत दिन हुए बच्चे मिले ही नहीं।

विरासत को संभालने वाले वारिस कहां तक तैयार हुए होंगे? वैसे बच्चों की भी बड़ी कमाल है जो तमोप्रधान स्टेज में पहुंचकर अति तमोप्रधान बन चुके संसार में जहां भ्रष्टाचार अपनी चरमसीमा पर हो, विकारों की दलदल में गले तक डूबे जहान में, आसुरी असंख्य लश्कर के सामने ये मुट्ठी भर बच्चे भला कैसे सामना करते होंगे? काफी दिल बीते बच्चों की कोई खबर नहीं आयी।

कभी जोश में आकर बिना ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र लिए, बिना ड्रामा की ढाल धारण किये, योग के

कवच रहित ही कर्मक्षेत्र पर बहुरुपी शत्रु से लड़ने के लिए तो नहीं खड़े हो जाते? कहीं माया मारीच उन्हें इच्छाओं के स्वर्णिम प्रलोभन में भ्रमित कर अपनी उपेक्षाओं की कर्कशता से मन को लक्ष्यविहीन का मूर्छित तो नहीं कर दिया। कारण क्या है आखिर बहुत दिन हुए बच्चे मिलने क्यों नहीं आये? अब क्या लगता है सीताओं का पता लगाने मुझे स्वयं जाना होगा! शायद कर्मक्षेत्र पर बहुत व्यस्त हो गये होंगे या फिर माया से पस्त हो चुके होने या अलमस्त हो मदमस्त हो त्रस्त हो रहे होंगे। माया ने उनके पूरा परास्त करने का बंदोबस्ते कर लिया होगा, देख कर आता हूं।

3. द्रोणाचार्य के सभी पाण्डवों एवं कौरवों को अपने प्रिय पुत्र अश्वथामा को भी एक साथ शिक्षा दी पर अर्जुन ने उनसे संपूर्ण शिक्षा ली और उसको प्रैक्टिकल करके सबसे प्रिय पात्र बना। अपनी पहचान सिर्फ शिक्षक के आधार से बनाई और अपने जीवन के हर कर्मक्षेत्र पर अपने शिक्षक की पहचान दी, इसी प्रकार संदीपन की प्रसिद्धि श्रीकृष्ण के शिक्षक के रूप में अधिक है। ऐसे ही जगदीश भाई को भी बाबा सदा अपने सामने बिठाते थे, कई बार जगदीश भाई जी जब बाबा से मिलने आते थे तो बाबा सब को बाहर भेज देते थे और कहते थे कि जगदीश बच्चा जब सामने आता है तो शिव बाबा की प्रवेशता होती है। साकार मुरली में भी बाबा ने कई बार कहा है कि चात्रक बच्चों के सामने ज्ञान डांस अच्छी होती है। एक अच्छा शिक्षक अपनी सारी शिक्षा विद्यार्थियों को देने के बाद एक अलग ही खुशी का अनुभव करता है। इसी प्रकार परम शिक्षक ने समस्त वेदों-शास्त्रों का सार, तीनों कालों, तीनों लोकों का राज एवं अपना संपूर्ण ज्ञान इतने सरलतम तरीके से देकर अति गहन ज्ञान को अति सरल बना, अल्पज्ञ एवं अबोध मानव को मूल्यवान, सुयोग्य एवं दैवीस्वरूप बनाने के लिए दिया, अति कमजोर एवं हिम्मतहीन बच्चों को सर्वोच्च शिक्षा स्वरूप में लाने के लिए सिर्फ 4 सब्जेक्ट बनाये, पर कर्मक्षेत्र पर जाकर पता नहीं शिक्षा कैसी चल रही है। बहुत दिन हुए बच्चे मिले नहीं, कैसा स्वरूप ढाल पाये हैं? कैसी-कैसी व कितनी परीक्षायें दे रहे होंगे? ऐसा न हो परीक्षा को समस्या समझ दिलशिकस्त हो बैठ गये हों?

शिक्षा को मस्तक की डायरी में संकल्प की स्याही से लिखने की जगह सिर्फ कागज की डायरी में बॉलपेन की ब्लूइंक से लिखकर बक्से में तो नहीं रख दी है जो बुद्धि पर काफी जोर देने पर भी याद नहीं आ रही हो। ज्ञान के शब्दों को विचारों का प्रवाह बना मन के उत्सर्ग से बुद्धि के प्युरिफिकेशन के बाद कर्म एवं व्यवहार के द्वारा चरित्र को हर रग में दौड़ाने से जीवन के कैनवास में कौन सा स्वरूप दिख रहा है? यह क्लीयर हो रहा है या ज्ञान सिर्फ वाणी की वीणा से झंकृत हो कान के श्रवण तक ही सीमित है? बहुत दिन बीते बच्चों की पढ़ाई कैसी चल रही है या फिर माया की लड़ाई में की कमाई भी चट कर ली है? वैसे हमें अपने बच्चों पर पूरा विश्वास है कि आखरीन जीत तो इन्हों की ही होनी है, माया चाहे जैसे रूप रच ले परन्तु न मिलने पर प्रतीक्षा आशंकित करने लगती है कि कहीं बच्चे पढ़ाई को सरल समझते-समझते अलबेले तो नहीं हो गये हैं। यही एक पढ़ाई है जिसमें पढ़ाई का समय कम और परीक्षायें अधिक होती हैं और हर कहीं परीक्षा हर कोई परीक्षक बन जाता है। कहीं बच्चे कन्फयूज न हो जायें। जो शिक्षा देवत्व को प्राप्त करने एवं

दैवी साम्राज्य के लिये दी थी वह आधुनिकता की रौनक में कहीं पराधीनता की स्वर्णिम सूक्ष्म जंजीरों में तो नहीं जकड़ते जा रहे हैं? शिक्षा की परिभाषा सिर्फ रटन्ति विद्या की तरह तो नहीं समझ रहे और जीवन हीरे जैसा बनाने के बजाए कौड़ियों के पीछे तो समय नहीं गंवा रहे? बहुत दिन बीते बच्चे मिले नहीं अभी संपूर्ण शिक्षा का सार दना हो तो मैं ही मिल आता हूं।

4. एक विवेकानंद ने पाश्चात्य संसार में वेदों के साथ रामकृष्ण परमहंस को भी प्रसिद्ध कर भारतीय संस्कृति का परचम लहरा दिया, परमहंस रामकृष्ण जी ने योग्य शिष्य की पहचान कर अपना सर्वस्व समर्पण कर खुद को कंगाल कर लिया था, ऐसा उन्होंने स्वयं कहा था और विवेकानंद ने उन शक्तियों के आधार से गुरु के साथ-साथ स्वयं को भी बहुमूल्य बना लिया। जबकि उनके गुरु ने तो सिर्फ सन्यास के बदले सिर्फ मोटे कपड़े और मोटे खाने की ही जिम्मेवारी ली थी, वैसे सच मानें तो दुनिया में गुरु तो सिर्फ एक ही है क्योंकि जो भी गुरु कहे जाते हैं वह कभी न कभी तो शिष्य रहे होते हैं गुरु तो बाद में बनते हैं पर सद्गुरु कभी किसी का शिष्य नहीं बनते वह सदैव गुरु ही है, उस परम सद्गुरु को ऋषि-मुनियों की चमत्कारी दृष्टि भी नहीं पहचान सकी। महान धर्मात्माओं की दूरदर्शी बुद्धि भी जिसे न ढूंढ सकी। विज्ञान के अति सूक्ष्मदर्शी यंत्रों से भी जिसे वैज्ञानिक नहीं देख सके, 2500 वर्षों से जिसकी तलाश में नित नये उपक्रम मानव के किये पर मिलन नहीं हो पाया। वह जगत नियंता करूणानिधन स्वयं सोच रहे हैं बहुत दिन बीते बच्चे मिले नहीं।

भक्ति की अंधश्रद्धा से इनका समय तो बहुत बच गया है, तीर्थ, व्रत, उपवास, स्नान में भी समय नहीं गंवाया है, वेदों शास्त्रों के पाठ का समय बच रहा होगा, हठयोग, मूर्तिपूजा, मन्त्र, साधना, आसन, आरती का भी झमेला नहीं फिर ये बच्चे कहां समय लगा रहे हैं? आध्यात्मिक बनते-बनते कहीं आधुनिकता की धूल भरी आंधी की चपेट में तो नहीं आ गये जिससे सही पथ ने दिखने से भटक रहे हो या चमत्कार की भूल भुलैया में अभूल होने का दम्भ भर इधर सही या उधर सही के अनुमान में फंस गये हैं। हमने तो सिर्फ एक महामंत्र दिया है जो अचूक और अभेद्य होने के साथ हर समय हर जगह हर मुश्किल को सरल करने का आकटय मंत्र है, बच्चे क्या वह भी भूल गये हैं। दिन भर कितने लोगों का नम्बर मिलाते रहते, कितनें लोगों से बातें करते, कितनों से मिलते पर जो मुक्ति जीवनमुक्ति दाता, काल के पंजे से छुड़ाने वाला, भवभय बंधन से मुक्तिय देने वाला, तीनों लोकों का मालिक बनाने वाला, सतोप्रधान जीवन बनाने वाला, हर दर्द हर दु:ख हरने वाला है, बच्चे उससे मिलने क्यों नहीं आ रहे हैं?

अल्पकालीन क्षणभंगुर सुख में तो बच्चों ने फंसकर अतिन्द्रिय सुख के साथ 21 जन्मों रके सर्व सुख को भी गंवाने की राह तो नहीं पकड़ ली है? अनेक धर्मो के बाजार से निकलते-निकलते गुरुओं की भरमार में, सच्चे ज्ञान को पहचानते-2 कहीं माया के विकारों की मार से बीमार तो नहीं हो गये? चलते-चलते कहां ठहर गये? वैसे बच्चों का तीसरा नेत्र तो खुल ही गया था सच्चे-झूठे की पहचान तो कर ही ली थी, योग की अनुभूतियां भी करते थे, विकारों की गुलामी से आत्मिक स्वतंत्रता को भी महसूस किया ही था, ऐसा हो तो नहीं सकता कि वे फिर से माया से दोस्ती कर लें, नहीं यही मेरे बच्चे कल्प-कल्प के विजयी हैं। माया के

साम्राज्य को ध्वस्त करने वाले हैं, राणव की सोने की लंका जलाकर स्वर्णिम संसार बनाने वाले हैं, शायद सोच रहे हैं कि पूरा ही फतेह कर गुरुदक्षिणा में बाप समान, कर्मातीत स्थिति, विकर्माजीत का उपहार लेकर जाऊं, मैं ही मिलकर आता हैं वैसे बच्चों को बीच-बीच में मिलते रहना चाहिए जैसे भी हैं त्रिभुवन-त्रिपुरारी से कुछ छिपा नहीं है फिर भी मिलकर बताने पर खुशी होती है।

तुम परमपिता के बच्चे हो, तुम्हें सब संभव कर दिखलाना है
लहरों से साहिल को ढूंढो, नहीं तूफानों से घबराना है,
तुम्हें आगे कदम बढ़ाना है, तुम्हें आगे बढ़ते जाना है
इस मारामारी की दुनिया में, सुख चैन तुम्हें लाना होगा
इस उजड़े मंजर में फिर से तुम्हें सुख का जहां बसाना होगा
इस दु:ख के झंझावत में तुम्हें खुशियां बरसाना होगा,
आश्वस्त करो उस पीढ़ी को तुम्हें जिसका कर्ज चुकाना है
तुम्हें आगे कदम बढ़ाना है.....
हर मंजिल दस्तक देती है, पुरुषार्थ की उत्तम रेखा पर
तकदीर स्वत: ही बदलती है, सतकर्मो की अभिलेखा पर
मन को मत भारी करना कभी, तुम्हें सबके दर्द मिटाना है
तुम्हें आगे कदम बढ़ाना है .....
मन में दृढ़ निश्चय इतना हो, हर मुश्किल पीछे हट जाये
पुरुषार्थ में इतना दमखम हो, मंजिल भी खुद पे शरमाये
आजाद हिन्द के उन्मुक्त तरूप, तुम्हें इतिहास बदलना है
तुम्हें आगे कदम बढ़ाना है.....
नहीं शेर कभी ढूंढा करते, पदचिन्हों में अपने पथ को
जांबाज नहीं भागा करते, नहीं कभी किसी की रहमत को
तुम प्यारे प्रभु के प्रिय प्रतिनिधि हो, तुम्हें खुद में वह भाव जगाना है
तुम्हें आगे कदम बढ़ाना है, तुम्हें आगे बढ़ते जाना है.....

ओम् शान्ति